काव्यांग-प्रभा

काव्य

रस

रीति

काव्यगुण

NP

डॉ. नवीन नंदवाना

काव्यांग-प्रभा • डॉ. नवीन नंदवाना

NP

NP
नेशनल
पब्लिकेशन्स
जयपुर

ISBN 978-93-81305-25-6

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2019

■

मूल्य : ₹ 495

■

प्रकाशक
नेशनल पब्लिकेशन्स
श्याम फ्लैट्स, फतेहपुरियों का दरवाजा
चौड़ा रास्ता, जयपुर - 302 003
फोन : 0141-4914552

■

टाइपसैटिंग
नेशनल कम्प्यूटर्स, जयपुर

■

मुद्रक
हरीश प्रिन्टर्स, जयपुर

अपनी बात

299

हिंदी काव्यधारा को समझने के लिए काव्यांगों का ज्ञान आवश्यक है। इस दिशा में अभी कार्य की संभावना को देखते हुए ही इस पुस्तक का लेखन किया गया है। काव्यांगों को समझाने वाली कुछेक पुस्तकें अभी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हो पाती हैं किंतु उनके अध्ययन से पूर्ण संतोष मिल पाता हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। कारण कि उन पुस्तकों में अध्याय विशेष को तो पूरे विस्तार के साथ समझाया गया हैं किंतु कुछ अन्य अध्यायों की ओर बढ़ने पर पाते हैं कि मात्र औपचारिकता का निर्वहन करते हुए अतिसंक्षेप में उसे पूरा कर दिया गया है।

चूँकि काव्यांग एक ऐसा महत्त्वपूर्ण विषय है जिसका ज्ञान हिंदी के विद्यार्थी को होना आवश्यक है। यह एक ऐसा विषय है जो कि विद्यालयी स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। प्रत्येक स्तर के परीक्षार्थी और अध्यापन में संलग्न शिक्षकगण वर्षपर्यन्त इस दिशा में मार्गदर्शन देने वाली एक अच्छी पुस्तक की तलाश में रहते हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए मैं इस पुस्तक के लेखन की दिशा में प्रवृत्त हुआ।

इस पुस्तक में सर्वप्रथम काव्य के लक्षणों पर भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों के अभिमत का सहारा लेकर विचार किया गया। इसके बाद रस, छंद, अलंकार, काव्य-रीति, काव्य-गुण और काव्य-दोषों पर गंभीरतापूर्वक पूरे विस्तार के साथ लेखन का प्रयास रहा है। यह बात हर बार ध्यान में रही है कि कोई भी अध्याय विशेष मात्र औपचारिक बनकर न रह जाए बल्कि उसे उस स्तर तक जाकर लिखा जाए जिससे कि वह विद्यालयी, विश्वविद्यालयी परीक्षाओं के साथ-साथ विविध प्रतियोगी परीक्षाओं के परीक्षार्थियों के लिए भी सहायक सिद्ध हो सके।

इस पुस्तक के माध्यम से यह भी प्रयास किया गया है कि विविध विषयों को समझाने के लिए जिन उदाहरणों का सहारा लिया जाए वे संदर्भ सहित हों, इसलिए

अधिकांश काव्य पंक्तियों के साथ उनके रचनाकार का नाम भी देने का प्रयास किया गया है जिससे कि साक्षात्कार आदि की तैयारी में संलग्न विद्यार्थी अपने साक्षात्कार में ससंदर्भ उसे स्पष्ट कर सकें। उदाहरणों के चयन में भी दो बातों का ध्यान विशेष रूप से रखा गया है—प्रथम तो यह कि किसी रस, छंद या अलंकार आदि को समझाने के लिए जो प्रचलित और प्रसिद्ध उदाहरण हैं, वे भी इस पुस्तक में आ जाएँ, साथ ही दूसरी बात यह कि विद्यार्थियों को नए उदाहरणों से भी रू-ब-रू करवाया जाए। उदाहरणों की संख्या को लेकर भी पुस्तक में उदारता का निर्वहन किया गया है। एकाधिक उदाहरणों के सहारे बात को समझाने का प्रयास प्रत्येक अध्याय में रहा है।

पुस्तक लेखन का कार्य बहुत पहले ही प्रारंभ कर दिया था किंतु हम जानते हैं कि प्रत्येक कार्य की पूर्णता का अपना समय होता है। शायद इसे इतनी लंबी अवधि के बाद ही पूर्ण होना था। इस कार्य को पूरा करने में कई मित्र और गुरुजन, सहायक और प्रेरणा-स्रोत रहे। उन सभी का आभार व्यक्त करना चाहूँगा। आशा है कि यह पुस्तक सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

—नवीन नंदवाना

अनुक्रम

1 काव्य 1

काव्य लक्षण / 1 • संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रदत्त काव्य लक्षण / 1 • हिंदी विद्वानों द्वारा प्रदत्त काव्य लक्षण / 3 • पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रदत्त काव्य लक्षण / 5 • काव्य-भेद / 7 • काव्य-तत्त्व / 8 • काव्य-हेतु / 9 • काव्य हेतु विषयक विविध आचार्यों के अभिमत / 10 • काव्य-प्रयोजन / 12 • काव्य-प्रयोजन विषयक विविध मत / 12 • संस्कृत आचार्यों द्वारा स्वीकृत काव्य-प्रयोजन / 12 • हिंदी विद्वानों द्वारा स्वीकृत काव्य-प्रयोजन / 14 • आधुनिककालीन हिंदी आलोचकों के अभिमत / 14 • पाश्चात्य विद्वानों द्वारा स्वीकृत काव्य-प्रयोजन / 15

2 रस 16

रस : अर्थ / 16 • रस शब्द की व्युत्पत्ति / 16 • रस सूत्र / 17 • रस का स्वरूप / 17 • रस संख्या / 18 • रस के अवयव / 19—स्थायी भाव / 19; विभाव / 21; अनुभाव / 21; संचारी भाव / 24 • रस : लक्षण और उदाहरण / 32 • शृंगार रस / 32 • हास्य रस / 40 • करुण रस / 42 • रौद्र रस / 44 • वीर रस / 46 • भयानक रस / 49 • वीभत्स रस / 51 • अद्‌भुत रस / 53 • शांत रस / 55 • भक्ति रस / 57 • वात्सल्य रस / 59 • रसानुभूति व भावानुभूति / 63 • रस मैत्री और विरोध / 63

3 छंद 65

छंद : अर्थ / 65 • छंद : मात्रा और वर्ण विचार / 66 • छंद : लघु-गुरु विचार / 66 • वर्ण व मात्रा गणना / 67 • छंद : गण विचार / 68 • छंद : यति-गति-चरण / 68

छंद : भेद / 69—
(क) मात्रिक छंद / 70—दोहा / 70; सोरठा / 71; बरवै / 72; उल्लाला / 73; चौपई / 73; चौपाई / 74; गीतिका / 75; हरिगीतिका / 76; उल्लाला / 77; सार / 78; वीर / 79; रोला / 79; कुण्डलिया / 80; छप्पय / 82
(ख) वर्णिक छंद / 83—द्रुतविलम्बित / 83; वंशस्थ / 84; वसन्ततिलका / 85; मालिनी / 86; मन्दाक्रान्ता / 87; शिखरिणी / 88; शार्दूलविक्रीड़ित / 89; स्रग्धरा / 90; तोटक / 91; सवैया / 91—मदिरा सवैया / 92; मालती सवैया / 92; चकोर सवैया / 93; किरीट सवैया / 94; अरसात सवैया / 94; सुमुखी सवैया / 95; वाम सवैया / 95; मुक्तहरा सवैया / 95; लवंगलता सवैया / 96; दुर्मिल सवैया / 97; सुन्दरी सवैया / 97; अरविन्द सवैया / 98; कुन्दलता सवैया / 98; गंगोदक सवैया / 99 • दंडक छंद / 99—घनाक्षरी (मनहरण कवित्त) / 99; रूपघनाक्षरी / 100; देवघनाक्षरी / 101

4 अलंकार 103
अलंकार : अर्थ / 103 • अलंकार की परिभाषाएँ / 103 • संस्कृत व हिन्दी आचार्यों द्वारा प्रदत्त परिभाषाएँ / 104 • अलंकार : भेद / 104 • अलंकार : महत्त्व और परम्परा / 105
अलंकार : लक्षण और उदाहरण / 107—
शब्दालंकार / 107 • अनुप्रास / 107 • लाटानुप्रास / 111 • यमक / 111 • श्लेष / 112 • वक्रोक्ति / 115 • पुनरुक्तिप्रकाश / 116 • पुनरुक्तवदाभास / 117 • वीप्सा / 118
अर्थालंकार / 118 • उपमा / 118 • उपमेयोपमा / 121 • अनन्वय / 122 • रूपक / 122 • उत्प्रेक्षा / 125 • संदेह / 127 • भ्रांतिमान / 129 • अतिशयोक्ति / 129 • दृष्टांत / 133 • उदाहरण / 135 • व्यतिरेक / 136 • अन्योक्ति (अप्रस्तुत प्रशंसा) / 137 • समासोक्ति / 138 • अर्थान्तरन्यास / 138 • विरोधाभास / 140 • विभावना / 141 • विशेषोक्ति / 141 • असंगति / 142 • अत्युक्ति / 143 • प्रतीप / 144 • दीपक / 145 • प्रतिवस्तूपमा / 146 • अपह्नुति / 147 • व्याजस्तुति / 148 • व्याजोक्ति / 149 • काव्यलिंग / 149 • यथासंख्य (क्रमालंकार) / 150 • परिसंख्या / 151 • तद्गुण / 152 • मीलित / 153 • उन्मीलित / 153 • परिकर / 154 • परिकरांकुर / 155 • मुद्रा / 155 • स्मरण / 156 • निदर्शना / 157
पाश्चात्य अलंकार / 157 • मानवीकरण / 155 • विशेषण-विपर्यय / 159 • ध्वन्यर्थ व्यंजना / 160

5 काव्य-रीति 161
काव्य-रीति : अर्थ / 161 • काव्य-रीति : रीति परम्परा एवं विकास / 162 • काव्य-रीति : भेद / 164—वैदर्भी रीति / 166; गौड़ी रीति / 167; पांचाली रीति / 169

6 काव्य-गुण 171
काव्य-गुण : अर्थ / 171 • काव्य-गुण : संख्या और प्रकार / 173 • काव्य-गुण : भेद / 175—; माधुर्य गुण / 175; ओज गुण / 177; प्रसाद गुण / 179

7 काव्य-दोष 182
काव्य-दोष : अर्थ / 182 • संस्कृत आचार्यों के अभिमत / 182 • हिन्दी विद्वानों के अभिमत / 184 • काव्य-दोष : भेद / 184 • काव्य-दोष : लक्षण और उदाहरण / 186—श्रुतिकटुत्व / 186 • च्युत संस्कृति / 187 • क्लिष्टत्व / 188 • न्यूनपदत्व / 189 • अधिकपदत्व / 190 • पुनरुक्त / 190 • ग्राम्यत्व / 191 • अप्रतीतार्थत्व / 192 • संदिग्धत्व / 193 • अश्लीलत्व / 193 • हतवृत्तत्व / 194 • अक्रमत्व / 195 • दुष्क्रमत्व / 196 • व्याहतत्त्व / 197 • स्वशब्दवाच्य / 197